श्री भगवान कृष्ण को हर जगह और हर जीवित प्राणी में समान रूप से देखना
Seeing Shri Bhagavan Krishna equally everywhere and in every living being

Respect everyone and every living being
हर किसी का और हर जीवित प्राणी का सम्मान करें

श्रीमद्भगवदगीता के कुछ श्लोक
Some Shlokas from the Srimad Bhagavad Gita

क्या आप भगवान श्री कृष्ण के भक्त हैं?

फिर सभी प्राणियों में ईश्वर को देखें!

Are you a devotee of Shri Krishna?
Then see Him in everyone and every living being!

SBG 6:29
जो योगी सर्वत्र अपने स्वरूप को देखता है और ध्यान से भरा हुआ गहन हृदय रखता है, वह सभी प्राणियों में अपना स्वरूप को विद्यमान देखता है और सभी प्राणियों को अपना स्वरूप में देखता है।
A yogi whose Self is united with Divine Consciousness, sees the Self abiding in all beings and all beings in the Self. Such a person sees the same everywhere.

SBG 7:18
जहाँ मैं प्रत्येक भक्त को गुणी मानता हूँ, वहीं **आत्म-साक्षात्कारी भक्त को मैं अपना स्वरूप मानता हूँ** क्योंकि उसका अंतिम लक्ष्य मुझे प्राप्त करना है, और उसका मन पूरी तरह से मुझ पर केंद्रित है।
While I consider every devotee to be virtuous, **I regard the SELF-realised devotee as My own Self** because his ultimate goal is attaining Me, and his mind is fully focussed on Me.

SBG 10:20
हे गुडाकेश (अर्जुन), मैं ही सभी प्राणियों का आदि, मध्य और अंत हूं तथा सभी प्राणियोंके अन्तःकरणमें आत्मरूपसे भी मैं ही स्थित हूँ।
I am the Self, O Arjuna, situated in all living entities.
I am the origin, the middle and also the end of all beings.

SBG 13:27 (or 28 in some editions)
जो सभी प्राणियों में परमात्मा को देखता है तथा नाशवान शरीरों में अविनाशी आत्मा को देखता है, वह सच्चा द्रष्टा है।
The person who truly sees is the one who sees the Paramatma or Supreme Bhagavan, existing equally in all beings – the unperishing within the perishing.

SBG 13:28 (29 in some editions)
ऐसा व्यक्ति एक ही परमात्मा को हर जगह समान रूप से निवास करते हुए देखता है और वह अज्ञानी लोगों की तरह अपने अहंकार को स्वयं समझकर अपने आध्यात्मिक कल्याण को नाश नहीं करता है। अत: वह उच्चतम लक्ष्य तक पहुँच जाता है।
Such a person perceives the same Supreme Bhagavan dwelling equally everywhere and he does not degrade his own spiritual well-being by mistaking his ego to be the Self like the way ignorant people do. He, therefore, reaches the highest goal.

प्रेम और सम्मान दो अद्भुत कारक हैं जो न केवल आपके जीवन को सुंदर बना सकते हैं परन्तु आपके जगत को शांतिपूर्ण, समृद्ध तथा संतुष्टिदायक बना सकते हैं।

आपकी सुख संतुष्टि आपके हाथ में है।

Love and respect are two magical factors that can make not only your life beautiful but also make the world around you peaceful, enriching, and fulfilling.

Your happiness is in your hands.